नियमावली (सत्रम् 2026-2027)

राजकीय संस्कृत महाविद्यालयः फागली, शिमलाः (हि.प्र.)

PROSPECTUS

Govt. Sanskrit College, Phagli, Shimla (H.P.)-171004

Phone: 0177-2835323 | E-mail: sktshimla@gmail.com

सत्यं शिवं सुन्दरम
गौरवं हि गुरोर्भूषा शिष्यभूषाऽनुशासनम्
"नत्वा सरस्वती देवीं ज्ञानरूपां सरस्वतीम् ।
सादरमभिनन्द्येऽहं गुरुन् तत्वगुणान्वितान् ।।"

महाविद्यालय का संक्षिप्त इतिहास

राजकीय संस्कृत महाविद्यालय (फागली) शिमला प्राच्यपद्धति द्वारा भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत अध्ययन की प्राचीनतम संस्था है। इस शिक्षण संस्था का शुभारम्भ सन् 1917 में श्री ब्राह्मण सभा द्वारा किया गया। उस समय श्री ब्राह्मण सभा ने संस्कृतविद्या के प्रचार एवं प्रसार की दिशा में महनीय योगदान दिया एवं उनके नेतृत्व में इस संस्था का नाम श्री ब्राह्मण सभा संस्कृत महाविद्यालय शिमला रखा गया। इस संस्था ने दीर्घकाल से भारतीय संस्कृति के निर्वाहक एवं उच्चकोटि के विद्वान समाज को दिए, जिनमें इस संस्था को गौरवान्वित करने वाले अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त राजगुरु पूज्यपाद आचार्य दिवाकर दत्त शर्मा अग्रगण्य रहे हैं, जो इस महाविद्यालय के विकास की उज्ज्वल पृष्ठभूमि है तथा 40 वर्षों तक इन्होंने इसी महाविद्यालय के प्राचार्य पद को अलंकृत किया।
सन् 1964 ईस्वी जून मास में इस महाविद्यालय का नाम भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्व० पंडित जवाहर लाल नेहरु के देहावसान पर श्री ब्राह्मण सभा ने नेहरु जी के प्रति श्रद्धाञ्जलिस्वरूप नेहरु संस्कृत महाविद्यालय शिमला रखा। 52 वर्षों तक इस महाविद्यालय का संचालन श्री ब्राह्मण सभा द्वारा किया गया तथा सन् 1969 में हिमाचल प्रदेश सरकार ने इसका अधिग्रहण किया। अपने दीर्घजीवनकाल में इस महाविद्यालय ने अनेक भवनों में अपने दिन व्यतीत किए - कभी कैथू में, कभी कृष्णानगर की मस्ज़िद में, कभी गंज बाजार में, कभी लक्कड़ बाजार में। विगत वर्षों से श्रमिक सदन (लेबर होस्टल) फागली में चल रहा था सम्प्रति सौभाग्यवश फागली में ही महाविद्यालय के लिए भवन निर्माण हो चुका है और कक्षाओं का विधिवत् संचालन हो रहा है।

आचार्य - वर्गाः (Faculty List)

- 1. डॉ० मुकेश शर्मा - प्राचार्यः बी.एड. साहित्याचार्य (पी.एच.डी.)
- 2. डॉ० पुरुषोत्तम सिंह – सहायक आचार्य इतिहास पी.एच.ड़ी.
- 3. . डॉ० रमेश शर्मा - सहायक आचार्य (अंग्रेजी) एम.ए., (पी.एच.डी.)
- 4. डॉ० गिरीश कुमार - साहित्याचार्यः आचार्य साहित्य , पी.एच.ड़ी.
- 5. डॉ० दिनेश शर्मा - सहायक आचार्य (हिन्दी) एम.ए. (हिन्दी) पी.एच.ड़ी.
- 6. डॉ० किरण सकलानी - दर्शनाचार्यः आचार्य दर्शन पी.एच.ड़ी.
- 7. डॉ० वेद प्रकाश - ज्योतिषाचार्यः आचार्य ज्योतिष, पी.एच.डी.
- 8. डॉ अजय भारद्वाज - व्याकरणाचार्यः आचार्य व्याकरण, पी.एच.डी,
- 9. श्रीमती रोहिणी - प्रवक्ता (इतिहास) - स्कूल संवर्ग एम.ए.

कार्यालयीय - कर्मचारिण: (Office Staff)

- 1. श्री वेद प्रकाश - अधिक्षक (ग्रेड-11)
- 2. श्री मनोज - लिपिक
- 3. श्री वेद प्रकाश - चतुर्थ श्रेणी
- 4. श्रीमती रानी देवी - चतुर्थ श्रेणी
- 5. श्रीमती रुकमणी - चतुर्थ श्रेणी

महाविद्यालय की प्रमुख विशेषताएँ

1. हिमाचल प्रदेश सरकार तथा शिक्षा विभाग के सौजन्य से निर्मित महाविद्यालय का षड्तलीय नवीन भवन इसकी प्रमुख विशेषता है। जिसका शिलान्यास तत्कालीन मुख्यमन्त्री राजा वीरभद्र सिंह जी ने किया तथा 10 मई 2022 को तत्कालीन शहरी एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री सुरेश भारद्वाज ने इसका शुभारम्भ किया।

2. मुख्य पुराना भवन फागली में स्थित पुरूष छात्रावास के रूप में व्यवस्थापित कर दिया गया है तथा वहाँ विधिवत् पुरूष छात्रावास का निर्माण निकट भविष्य में प्रस्तावित है। अनेक वर्षों से किराये के भवन में चल रहा फागली भवन अब छात्र छात्रावास छात्रों के रहने योग्य बना दिया गया है।

3. महाविद्यालय का अपना दुर्लभ / सन्दर्भ ग्रन्थों से सुसज्जित लगभग 8,000 पुस्तकों वाला विशाल पुस्तकालय प्राच्य विद्याओं के अध्येताओं तथा शोधकर्ताओं के लिए तीर्थ स्थल है.

4. वर्तमान में उच्चतम शिक्षा प्राप्त, योग्य, अनुभवी तथा संस्कृत - संस्कृति को समर्पित आचार्यवृन्द इस संस्थान की प्रमुख विशेषता है। गुरुजनों के गौरव को द्योतित करते अनुशासनबद्ध, विनम्र, मेधावी/परिश्रमी छात्र-छात्राएँ इस महाविद्यालय की अमूल्य निधि हैं।

5. पांच स्मार्ट कक्षा कक्ष इसकी प्रमुख विशेषता है।

महाविद्यालय में प्रवेश के नियम एवं पात्रता

1. मैट्रिक (दसवीं) संस्कृत एवं अंग्रेजी विषय के साथ उत्तीर्ण छात्र ही प्राक् शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रवेश पा सकेगा।

2. विश्वविद्यालय द्वारा प्रवेश की निश्चित तिथि से महाविद्यालय में प्रवेश दिया जाएगा।

3. विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार प्रवेश की तिथि विलम्ब शुल्क देकर उस अवधि के भीतर भी छात्र प्रवेश पा सकता है।

4. प्रवेश के समय ही विद्यार्थी को रसीद लेकर सारे वार्षिक शुल्क (अपरिवर्तनीय या परिवर्तनीय) उसी समय जमा करने होंगे।

5. प्रवेश के समय दो पासपोर्ट फोटो देने होंगे।

6. शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रवेश के लिए संस्कृत विषय में 10+2 सहित / प्राक् शास्त्री- पास होना अनिवार्य है।

प्रवेश निरस्त एवं अवकाश सम्बन्धी नियम

1. यदि कोई छात्र किसी अन्य संस्था में नियमित अध्ययन करता हुआ प्रमाणित होगा तो उसका प्रवेश निरस्त कर दिया जाएगा।

2. जो छात्र प्रवेश स्वीकृत हो जाने पर प्रवेश सम्बन्धी औपचारिकताएं पूरी न करेगा, उसका प्रवेश निरस्त किया जाएगा।

3. यदि कोई विद्यार्थी कक्षा में दस दिनों तक निरन्तर उपस्थित नहीं रहता तो उसका नाम कक्षा की सूची से काट दिया जाएगा। ऐसे विद्यार्थी को 100/- रुपये देकर पुनः प्राचार्य से प्रवेश की अनुमति मिल सकती है। दो बार नाम कट जाने पर 200/- रुपये देकर पुनः प्रवेश की अनुमति प्राचार्य एवं प्रवेश समिति करेगी।

4. यदि किसी विद्यार्थी का कक्षा में तीन बार नाम कट जाता है तो उसे पुनः प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी।

5. जो छात्र किसी आवश्यक कार्य या बीमारी की स्थिति में अवकाश पर जाते हैं उन्हें अवकाश हेतु प्रार्थना - पत्र महाविद्यालय कार्यालय में देना होगा अन्यथा नियमानुसार दण्ड शुल्क देना पड़ेगा। तीन दिनों से अधिक बीमारी के अवकाश हेतु चिकित्साधिकारी का प्रमाण पत्र संलग्न करना आवश्यक है।

6. एक ही कक्षा में दो बार अनुत्तीर्ण छात्र उस कक्षा में प्रविष्टि नहीं किया जाएगा।

7. संस्कृत विषय के चारों पत्रों में अनुत्तीर्ण छात्र को प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

महाविद्यालयीय कक्षाएँ एवं पाठ्यक्रम

- प्राक् शास्त्री प्रथम एवं द्वितीय वर्ष (Annual System)
- शास्त्री – प्रथम समेस्टर एवं द्वितीय समेस्टर (NEP 2020 के अनुसार)
- शास्त्री द्वितीय एवं तृतीय वर्ष (रूसा प्रणालीानुसार)
- आचार्य - प्रथम एवं द्वितीय वर्ष (स्नातकोत्तर)
- पाठयक्रम https://drive.google.com/drive/folders/1fqvhTCQgMASfcaV1E98xbvTfeqlt7O5p

प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम विवरण

प्रथम पत्र : व्याकरण (वरदराजकृत लघुसिद्धान्त कौमुदी)

द्वितीय पत्र : काव्यनाटक (क) रघुवंश प्रथम - द्वितीय सर्ग, (ख) स्वप्नवासवदतम्, (ग) वृत्तरत्नाकार

तृतीय पत्र : रचनानुवाद तथा गद्य - पद्य ((क) संस्कृत वाक्य रचना एवं अनुवाद - अनुवाद चंद्रिका, (ख) हितोपदेश)

चतुर्थ पत्र : दर्शन तथा उपनिषद ((क) अन्नम्भट्टकृत तर्क - संग्रह, (ख) श्रीमद्भगवद्गीता - प्रथम व द्वितीय अध्याय, (ग) ईशोपनिषद्)

पंचम पत्र : अंग्रेजी (ऐच्छिक - केवल विशिष्ट शास्त्री के लिए)

षष्ठ पत्र : हिन्दी अथवा इतिहास अथवा राजनीति विज्ञान

महाविद्यालयीय उपाधियों की समकक्षता

- प्राक् शास्त्री प्रमाण पत्र को 10+2 के समकक्ष माना गया है।
- शास्त्री डिग्री बी.ए. कला / बी.ए. ऑनर्स संस्कृत के समकक्ष है (शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार की 1964 तथा हिमाचल सरकार की 1967 की अधिसूचना अनुसार)।
- आचार्य डिग्री स्नातकोत्तर (एम.ए. संस्कृत) के समान है। इसके बाद छात्र सीधे एम.फिल./पी.एच.डी. में प्रवेश का अधिकारी है।

प्रवेश के समय देय शुल्क विवरण

वर्ग / कक्षा	कुल शुल्क (रुपये)
कुल शुल्क सामान्य वर्ग के प्राक् - I	रु. 2920-
कुल शुल्क आई०आर०डी०पी०/ बी०पी०एल० वर्ग के प्राक् - I	रु. 2670/-
कुल शुल्क सामान्य वर्ग के प्राक्- II	रु. 2830/-
कुल शुल्क आई०आर०डी०पी०/ बी०पी०एल० वर्ग के प्राक्- II	रु. 2580/-
सामान्य वर्ग के शास्त्री प्रथम वर्ष से शास्त्री अंतिम वर्ष तक	रु. 2920/-

आई०आर०डी०पी०/ बी०पी०एल० वर्ग के शास्त्री प्रथम से अंतिम वर्ष तक	रु. 2670/-
10+2 के बाद सामान्य वर्ग - शास्त्री प्रथम सत्र प्रवेश	रु. 2920/-
10+2 के बाद IRDP/BPL वर्ग - शास्त्री प्रथम सत्र प्रवेश	रु. 2670/-

* विशेष: सरकार एवं विश्वविद्यालय की अधिसूचनाओं के आधार पर समय-समय पर शुल्क एवं फण्ड परिवर्तनीय होंगे। सुरक्षा धन महाविद्यालय छोड़ने के दो वर्ष के भीतर प्रार्थना पत्र देने पर लौटाया जा सकता है।